ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 16 अंक 33 कुल पृष्ठ-8 19 से 25 अगस्त, 2021 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 श्रा.शु.-04

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना प्रदेश के तत्वावधान में श्रावणी वेद प्रचार का शुभारम्भ

श्रावणी के अवसर पर संस्कृति की रक्षा का लें संकल्प

– स्वामी आर्यवेश

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही बच्चे का सर्वांगीण विकास कर सकती है

– स्वामी प्रणवानन्द

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के तत्वावधान में 9 अगस्त, 2021 को श्रावणी वेद प्रचार का कार्यक्रम का शुभारम्भ करने के लिए एक विशेष कार्यक्रम हैदराबाद में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् न्यास के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी, सार्वदेशिक सभा के मंत्री एवं आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य, गुरुकुल पौंधा के आचार्य डॉ. धनंजय आदि विद्वान् सम्मिलित हुए। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः यज्ञ से हुआ। इसके ब्रह्मत्व का दायित्व आचार्य प्रियदत्त शास्त्री ने संभाला तथा यज्ञ का संयोजन प्रान्तीय सभा के उपप्रधान श्री हरिदत्त वेदालंकार ने किया। यज्ञ में मुख्य यजमान सभा के उपप्रधान ठाकुर लक्ष्मण सिंह जी के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री दिनेश सिंह सपत्नीक बनें। यज्ञ में अनेक लोगों ने आहुतियाँ प्रदान कर संस्कृति रक्षा प्रणाली एवं संस्कृत भाषा को बढ़ावा देने का संकल्प लिया। यज्ञ के उपरान्त पं. नरेन्द्र भवन के सभागार में एक सभा का आयोजन किया गया। इसका संयोजन आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के मंत्री श्री वेंकट रघुरामुलु एडवोकेट ने किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए प्रो. विट्ठलराव आर्य ने इस कार्यक्रम के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज से पूरे श्रावण मास में स्थान–स्थान पर वैदिक यज्ञों का कार्यक्रम चलाया जायेगा और आर्य समाज के उपदेशक, विद्वान् एवं भजनोपदेशक समाजों में वेद प्रचार का कार्य करेंगे। प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने कहा कि आज 9 अगस्त का दिन होने के कारण 'अंग्रेजों भारत छोड़ो दिवस' भी पूरे देश में विशेष रूप से मनाया जाता है और किसी विशेष बुराई के विरुद्ध आवाज उठाई जाती है। वर्तमान समय में भारत में जिस प्रकार से विदेशी भाषा अंग्रेजी का वर्चस्व स्थापित हो चुका है। उससे समस्त भारतीय भाषाओं एवं राष्ट्रभाषा का अपमान एवं अवमूल्यन हो रहा है। देश के प्रतिभावान छात्र–छात्राओं को प्रारम्भ से ही अंग्रेजी सीखने के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है और बड़ी से बड़ी प्रतियोगिताओं, हाईकोर्ट एवं सुप्रीम कोर्ट आदि में अंग्रेजी का प्रचलन होने से देश के आम नागरिकों को बेहद कठिनाई का सामना करना पड़ता है। अतः स्वदेशी भाषा एवं समस्त भारतीय भाषाओं को हर स्तर पर महत्त्व दिया जाना चाहिए और अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त की जानी चाहिए। प्रत्येक बच्चे को उसकी मातृभाषा में पढ़ने व प्रतियोगी परीक्षाओं में परीक्षा देने का अधिकार मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि आर्य समाज किसी भी भाषा विशेष का विरोधी नहीं है, किन्तु स्वदेशी भाषाओं का प्रबल समर्थक है।

इस अवसर आचार्य धनंजय ने आर्ष शिक्षा को लॉर्ड मैकाले की शिक्षा का विकल्प बताते हुए कहा कि जब तक पाठ्यक्रम में आर्ष शिक्षा को महत्व नहीं मिलेगा तब तक भारत अपनी मूल संस्कृति से नहीं जुड़ सकेगा।

स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती ने अपने प्रवचन में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्त्व पर प्रकाश डाला और उन्होंने कहा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली प्राचीनतम शिक्षा प्रणाली है। मर्यादा पुरुषोत्त श्रीराम और उनके अन्य भ्राताओं ने गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त की। योगेश्वर श्रीकृष्ण और बलराम ने गुरुकुल में शिक्षा पाई और इसी प्रकार गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के माध्यम से अनेक महापुरुषों ने शिक्षा प्राप्त की। आधुनिक युग के महान दार्शनिक युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भी गुरु विरजानन्द दण्डी के गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण की थी। अतः जो लोग गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का विरोध करते हैं, उन्हें इसके महत्त्व एवं इतिहास के सम्बन्ध में कोई विशेष जानकारी शेष पृष्ठ 4 पर

ऋषि दयानन्द के विचारों का संसार पर प्रभाव

– नारायण सिंह आर्य

ऋषि, वेदज्ञाता, महापुरूष कल्याणमय जीवनधारक बन कर संसार के कल्याण की कामना करते हुए पहले स्वयं तप और दीक्षा में निष्णात होते हैं पुनः वह राष्ट्र को बलवान और ओजस्वी बना देते हैं, ऐसे बलवान, ओजस्वी राष्ट्र के सामने समस्त दैवीय शक्तियाँ और दिव्य गुण युक्त विद्वान सिर झुका देते हैं।

– अर्थववेद 19/41/

इस युग में युग निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी घोर परिश्रम करके तपोमय जीवन के साथ शाश्वत जीवन की ओर खोज में अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा दी। योग युक्तात्मा ने ईश्वरीय नियमों का साक्षात्कार करके वैदिक ज्योति से संसार को आलोकित किया।

महर्षि जी के विचारों का प्रभाव :–

1. बाल विवाह निषिद्ध घोषित हुआ।
2. बाल विधवाओं के पुनर्विवाह का प्रचलन हुआ।
3. स्त्री शिक्षा का सामूहिक स्वीकार का सुधार हुआ।
4. सती प्रथा पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया।
5. हिन्दुओं ने अपनी रक्षा के लिये भिन्न–भिन्न अवसरों पर आर्य समाज को पुकारा – हैदराबाद का सत्याग्रह इसका उदाहरण है।
6. सभी के लिये समुद्र यात्राएँ प्रचलित हुई।
7. काशी विद्धत् परिषद् के पूर्व प्रधान श्रीयुत पं. गोपाल शास्त्री ने सायण और महीधर के भाष्यों का सार्वजनिक रूप से खण्डन करके ऋषि दयानन्द के वेद भाष्य की भूरि–भूरि प्रशंसा की और अपनी पुस्तक भारतीय संस्कृति में लिखा है कि– ''यों ही सैकड़ों दृष्ट्रान्त शास्त्रों से भरे पड़े है पर आज इन संस्कारों के बिल्कुल विपरीत देखने में आता है –पुत्र के लिये जब तक पिता ईश्वर के रूप में समक्ष विद्यमान है उसकी आज्ञा मानना और उसकी सेवा करना ही परमेश्वर पूजन है। फिर वह क्यों तीर्थों में देवताओं को ढूंढ़ता फिरता है। यूँ ही विद्यार्थी के लिये तो पुस्तक रूप में सरस्वती देवी और गुरू रूप में ईश्वर तो उसके सामने ही विद्यमान है, तो क्यों वह उसका अपमान कर मन्दिरों में दौड़ता फिरता है। इसी प्रकार स्त्री के लिये जब उसका पति उसके बाल, बच्चे परमेश्वर रूप में विद्यमान हैं तो वह क्यों सुबह–शाम मन्दिर में अक्षत–फल पानी फेंकती फिरती हैं।

स्त्री और शूद्रो के लिये धर्मशास्त्र कहते हैं जपस्तयस्तीर्थ यात्रा, प्रव्रज्या, मम् साधनम्। देवता राघनचैव स्त्री शूद्र पहनानिषद् = ऐसी स्थितियों में स्त्री और शूद्रों को मन्दिर जाना ही नहीं चाहिये। इसी पुस्तक में लिखा पेज 45, 46, 47, मेलों में गुण्डा, बदमाशों को कुकृत्य के लिए मौका मिलता है। इन मेलों की दुर्दशा अवर्णनीय है। यहाँ बीमारी फैलती है, हैजा होता है, कुछ मरते हैं, कुछ भागकर गाँवों में, देहातों में बीमारी ले जाते हैं। यूँ सारे देश में तहलका मच जाता है।

श्री दादा भाई नौरोजी जैसे व्यक्ति ने लोकमान्य तिलक से कहा था 'मुझे स्वराज समर में स्वामी दयानन्द के ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' से भारी प्रेरणा प्राप्त होती है। शहीद रामप्रसाद बिस्मिल जैसे अनेक क्रान्तिकारियों ने भी इसी ग्रन्थ से स्वाधीनता संग्राम की प्रेरणा ली थी।

8. सर सय्यद अहमद खाँ ऋषि दयानन्द के सहयोग में आगे बहुत आए। ऋषि दयानन्द इनको वैदिक धर्म में दीक्षित करना चाहते थे, किन्तु वह ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों के समर्थक होते हुए भी बड़ा साहसिक कदम नहीं उठा सके। किन्तु सर सैय्यद अहमद ने आर्य समाज में शामिल न होकर मुस्लिम सुधार के लिये ऋषि के वैदिक विचारों का सहारा लिया और कुरआन शरीफ का ऐसा भाष्य संसार के सम्मुख उपस्थित करने का प्रयत्न किया जो यथासंभव वेदानुकूल हो जिस पर मुस्लिम विद्वानों ने सय्यद अहमद को काफिर घोषित किया।

9. हाजी रहमतुल्लाह तो वैदिक धर्म को स्वीकार करके आर्य बन गए और संसार के प्रथम आर्य समाज बम्बई की बागडोर व पांच हजार रूपये (सन् 1875) दान में दिये। वह उच्च कोटि के सिद्धान्त मर्मज्ञ आर्य थे।

10. अंग्रेज सरकार घबरा गई और सैय्यद अहमद को मनाने का प्रयत्न किया। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय भी स्थापित कर दिया गया। यह अंग्रेजो का बहुत बड़ा घात था। सर सैय्यद अहमद इसमें फंस गये और उन्होंने घोषित किया कि हम मुस्लिम लोग जाति से पृथक कौम है।

स्वामी दयानन्द इस बात को अच्छी तरह समझ गये थे कि हिन्दी ही देश को एकता के सूत्र में पिरो सकती है। स्वामी दयानन्द के लिये देश सर्वोपरि था। स्वामी दयानन्द के आदेश पर आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य के लिये हिन्दी पढ़ना–पढ़ाना अनिवार्य कर दिया गया।

स्वामी दयानन्द 29 दिसम्बर, 1881 को बम्बई पहुँचे थे। बम्बई भारत की संस्कृति और राजनीति का केन्द्र था।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्वामी दयानन्द जी ने इस बार गौ रक्षा के लिए व्याख्यान दिये। उन्होंने कहा गौ रक्षा का प्रश्न केवल हिन्दू धर्म की परिधि तक सीमित नहीं रह सकता। उसका देश की व्यापक आर्थिक नीति से सम्बन्ध है। उन्होंने निश्चय किया कि तीन करोड़ भारतवासियों के हस्ताक्षर करवाकर एक निवेदन पत्र महारानी विक्टोरिया को भेजा जाये। इस प्रयास में अकेले शाहपुराधीश ने 40 हजार व्यक्तियों के हस्ताक्षर करवाकर भेजे। परन्तु दुर्भाग्य है कि 30 अक्टूबर, 1883 को जगन्नाथ हिन्दू रसोईये के दूध में जहर देने से असामयिक मृत्यु हो गयी।

इस प्रार्थना पत्र पर हस्ताक्षर करने वालों में मुसलमान और ईसाइयों की संख्या कम नहीं थी और यह भी कि गाय–बैलों के अतिरिक्त इसमें भैंसों की भी हत्या न करने की प्रार्थना की गयी थी। इससे पूर्व स्वामी दयानन्द जी ने राजस्थान के पोलिटिकल ऐजेन्ट कर्नल ब्रुक्स से तो यहाँ तक कह दिया कि भारत की अर्थ व्यवस्था की रीढ़ और सांस्कृतिक जीवन की प्रतीक गाय का वध जारी रहा तो इस देश में 1857 की क्रान्ति फिर दोहरायी जा सकती है।

थियोसोफिकल सोसायटी के फाउंडर मैडम ब्लैवेदस्की ने कहा कि ''शंकराचार्य के बाद में भारत में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ जो स्वामी दयानन्द जी से बड़ा संस्कृतज्ञ, उनसे बड़ा दार्शनिक, उनसे बड़ा तेजस्वी वक्ता तथा कुरीतियों पर आक्रमण करने में उनसे अधिक निर्भिक रहा हो।''

एक बार महात्मा गांधी ने महामना पंडित मदन मोहन मालवीय से कहा कि ''गंगा के किनारे, हरिद्वार के जगलों में गुरूकुल खोलकर जब स्वामी श्रद्धानन्द हिन्दी के माध्यम से उच्च शिक्षा दे सकते हैं तो वाराणसी की गंगा के किनारे बैठकर आप इन बच्चों को टेम्स का पानी क्यों पिला रहे हैं।''

महात्मा बुद्ध ने अपने धर्मग्रन्थ धम्मपद श्लोक 270 धम्म वग्गी–1 में लिखा जो प्राणियों का हनन करता है वह आर्य नहीं होता। जो सभी प्राणियों की रक्षा की बात करता है और उन पर किसी प्रकार की हिंसा नहीं करता वह आर्य कहा जाता है।

गौतम बुद्ध की वेद के प्रति भावना– सुतनिपात श्लोक 792 – बुद्धिमान वेदों से धर्म का निश्चय करता है।

जैन मत पर प्रभाव ग्रन्थ जैनतत्वादर्श उत्तरार्द एकादश परिच्छेद पृष्ठ 380 पर सृष्टि के उत्पत्ति में चार आर्यों ने वेदो को लिखा।

पुस्तक महामंत्र नवकार पृ. 19

ऊँ का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है।

सब कार्यों में प्रथम ओंकार का ही स्मरण किया जाता है। कहीं लिखना, कहीं पढ़ना, कहीं आना हो, कहीं नया कार्य करना हो, तो, सब कहीं ओं का ही गौरव देखने में आता है महामंत्र नवकार पृष्ठ 21।

सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी दयानन्द ने लिखा ''ईश्वर के समीप स्त्री–पुरूष दोनों बराबर हैं क्योंकि न्यायकारी है। उसमें पक्षपात लेशमात्र नहीं है। जब पुरुषों को पुनर्विवाह करने की आज्ञा दी जाए तो स्त्रियों को दूसरे विवाह से क्यों रोका जाये। प्राचीन आर्य लोग ज्ञानी, विचारशील और न्यायी होते थे। आजकल उनकी सन्तान अनार्य हो गयी है। कुछ धर्मों में पुरुष अपनी इच्छानुसार जितनी चाहे उतनी स्त्रियाँ रख सकता है। देश, काल, पात्र और शास्त्र का कोई बन्धन नहीं रहा। क्या यह अन्याय नहीं है? क्या अधर्म नहीं?''

हम तो सत्य ही कहेंगे–ऋषि ने कहा 'लोग कहते हैं कि सत्य को प्रकट न करो, कलेक्टर क्रोधित होगा, कमिश्नर अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा। अरे चक्रवर्ती राजा क्यों न अप्रसन्न हो, हम तो सत्य ही कहेंगे।' इसके पश्चात् उस उपनिषद् वाक्य को पढ़ा जिसमें लिखा है कि आत्मा को न कोई शस्त्र छेदन कर सकता है और न अग्नि जला सकती है, ऋषि गरजती हुई आवाज में बोले – यह शरीर तो अनित्य है। इसकी रक्षा में प्रवृत होकर अधर्म करना व्यर्थ है, इसे जिस मनुष्य का जी चाहे नाश कर दे। फिर चारो ओर अपनी तीक्ष्ण नेत्रों की ज्योति डालकर सिंहनाद करते हुए बोले – पररन्तु वह सूरमा वीर पुरुष मुझको दिखलाओ जो यह दावा करता है कि वह मेरी आत्मा का नाश कर सकता है। जब तक ऐसा वीर इस संसार में दिखाई नहीं देता मैं यह सोचने के लिए भी उद्यत नहीं हूँ कि सत्य को दबाउँगा अथवा नहीं। (पेज 24 महर्षि दयानन्द सरस्वती जीवन चरित्र–पंडित लेखराम) ऐसे बहुत सारे विचार हैं ऋषि दयानन्द के जिनका संसार पर प्रभाव है।

– उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

श्रावणी पर्व पर संस्कृति रक्षा का संकल्प लें

पूरे विश्व की आर्य समाजों से विनम्र अपील है कि श्रावणी उपाक्रम के कार्यक्रम को उत्साह एवं श्रद्धा के साथ मनायें। उस दिन जहाँ नये यज्ञोपवीत धारण करके आर्यजन स्वाध्याय, साधना एवं सेवा का संकल्प लेते हैं वहीं इस बार विशेष रूप से वैदिक संस्कृति, संस्कृत तथा गुरुकुल शिक्षा पद्धति एवं स्वभाषा की सुरक्षा करने का विशेष संकल्प लें और इसके लिए प्रभावशाली अभियान चलायें। सभी आर्य समाजें अपनी प्रान्तीय सरकारों तथा केन्द्र सरकार को पत्र लिखकर इन तीनों बिन्दुओं पर ध्यान आकृष्ट करायें और इनके महत्त्व पर प्रकाश डालें। आर्य समाज प्रारम्भ से ही वैदिक मान्यताओं, वैदिक संस्कृति, संस्कृत तथा स्वदेशी भाषाओं का समर्थक रहा है। दुर्भाग्य की बात है कि आज विशेष रूप से भारत में अपसंस्कृति (पाश्चात्य संस्कृति), लॉर्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली तथा अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व जिस प्रकार से बढ़ता जा रहा है उससे पूरे देश को सावधान होने की जरूरत है, अन्यथा भविष्य में देश की नई पीढ़ी के युवाओं को अपने सांस्कृतिक मूल्यों, स्वदेशी भाषाओं, संस्कृत भाषा तथा गुरुकुल शिक्षा पद्धति से वंचित होना पड़ेगा। जिसके परिणामस्वरूप हमारा यह देश मानसिक और भौतिक रूप से पाश्चात्य विचारधारा में आकंठ डूब जायेगा। अत: समय रहते सम्भलने की जरूरत है और इस श्रावणी पर्व पर देशभर के गुरुकुलों में, आर्य स्कूल, कालेजों में तथा आर्य समाजों और इसके अतिरिक्त सभी उन संस्थाओं में जो अपनी सांस्कृतिक धरोहर के पक्षधर हैं वे सभी विशेष यज्ञ करके संकल्प लें।

स्वामी आर्यवेश — सभा प्रधान

पं. माया प्रकाश त्यागी — कोषाध्यक्ष

प्रो. विट्ठलराव आर्य — सभा मंत्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

आर्य आदर्शों के प्रतीक योगीराज श्रीकृष्ण

– डॉ. भवानीलाल भारतीय

मनुष्य अपनी विविध प्रवृत्तियों को उन्नति के सर्वोच्च सोपान पर पहुंचा कर किस प्रकार एक साधारण मानव से महामानव के उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो सकता है, इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण कृष्ण का जीवन है। कारागार की विवशतापूर्ण परिस्थितियों में जन्म लेकर भी कोई मनुष्य संसार का महत्तम नेता किस प्रकार बन जाता है यह कृष्ण चरित्र में देखिए।

बंकिम के अनुसार श्री कृष्ण ने अपनी ज्ञानार्जनी, कार्यकारिणी और लोकरंजनी तीनों प्रकार की प्रवृत्तियों को विकास की चरम सीमा तक पहुंचा दिया था, तभी उनके लिए यह सम्भव हो सका कि वे अपने समय में महान् राजनीतिज्ञ और समाज व्यवस्थापक के गौरवान्वित पद पर आसीन हो सके।

बाल्यावस्था से लेकर जीवन के अन्तिम क्षण तक कृष्ण उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होते रहे। उनका एकमात्र उद्देश्य रहा, धर्म के अनुसार लोगों को अपने-अपने कर्तव्यों के पालन में रत रखना। वे स्वयं धर्म में अनन्य निष्ठा रखने वाले और उसके वास्तविक रहस्य को जानकर उसका उपदेश देने वाले महान् धर्मोपदेष्टा थे। ऋषि दयानन्द ने तो यहां तक कह दिया है कि श्रीकृष्ण ने जन्म से मरण पर्यन्त कुछ भी बुरा काम नहीं किया। यह सब कुछ धर्म के कारण ही सम्भव हुआ, और तभी तो महाभारतकार ने लिखा- ''यतो कृष्णस्ततो धर्मो यतो धर्मस्ततो जयः।''

जहां कृष्ण हैं, वहां धर्म है और जहां धर्म है वहां जय है संजय ने भी इसी प्रकार गीता के अन्त में कहा -

''यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीविजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।। (गीता 1878)

''जहां योगेश्वर कृष्ण और गाण्डीवधारी अर्जुन हैं, वहीं श्री है, वहीं विजय है। अधिक क्या कहें वही विभूति और अचल नीति है।'' ये उक्तियां कृष्ण को ईश्वरावतार मानकर नहीं कही गई है। यदि ऐसा होता, तो इनका कुछ भी मूल्य नहीं होता। ये कृष्ण की सर्वोपरि मानवीय भावनाओं को ही प्रकाशित करती हैं, जिनकी चरम साधना के कारण कृष्ण साधारण मानव की कोटि से उठकर महापुरुषों की श्रेणी में आये, योगेश्वर और योगिराज बने।

बाल्यकाल से ही देखिए। एक दृढ़ विचार वाले पुष्ट शरीर वाले और स्वस्थ मन तथा बलवान् आत्मा वाले ब्रह्मचारी में जो-जो विशेषताएं होनी चाहिए वे हमें कृष्ण में मिलती हैं। उनका शारीरिक बल एक अनुकरणीय वस्तु है, जिससे उन्होंने बाल्यकाल में ही अनेक त्रासदायक और हिंसक जन्तुओं का वध किया। समय आने पर उन्होंने युद्ध कौशल और रणनीति का सांगोपांग अध्ययन किया। युद्धनीति के वे कितने प्रकाण्ड पण्डित थे, यह तो इसी से ज्ञात हो जायेगा कि अर्जुन और सात्यकि जैसे वीर उनके शिष्य थे, जिनको उन्होंने युद्ध विद्या सिखाई थी। गदा-युद्ध के वे अच्छे ज्ञाता थे। निर्भयता, निडरता और चातुर्य के तो वे भण्डार ही थे।

शारीरिक बल के अतिरिक्त उनका शास्त्रीय ज्ञान भी बढ़ा चढ़ा था। वे वेदों और वेदांगों के ज्ञाता थे, यह हमें भीष्म की उक्ति से ज्ञात होता ही है। साथ ही साथ वे चिकित्सा, विद्याओं के भी पण्डित थे। मृतप्राय उत्तरा के बालक को जीवन प्रदान करना, मुरलीवादन कर सबके मन को मोहित करना तथा अर्जुन के सारथी बनकर भयंकर युद्धक्षेत्र में अपने रथी की रक्षा करना आदि उदाहरण इन बातों को सिद्ध करने के लिए उपस्थित किये जा सकते हैं। शारीरिक बल और मानसिक शक्तियों का उन्होंने चरम विकास किया था। परन्तु आचार की दृष्टि से भी उनकी बराबरी उस समय का कोई पुरुष नहीं कर सकता था। वे महान् सदाचारी और शीलवान् पुरुष थे। माता-पिता की आज्ञा पालन और उनके प्रति सदा पूज्य भाव रखने के गुण को उन्होंने कभी विस्मृत नहीं किया। वे मादक द्रव्यों तथा द्यूत बुराइयों से सदा दूर रहते थे। यहां तक कि उन्होंने समय-समय पर यादवों में ये आज्ञाएं प्रचारित करा दी थीं कि कोई जन यदि मदिरा पियेगा तो राज्य की ओर से दण्डनीय होगा। ब्रह्मचर्य के विषय में कहा जा सकता है कि एक पत्नीव्रत का पालन करते हुए भी उन्होंने सपत्नीक बारह वर्ष के ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया। तदनन्तर उनके प्रद्युम्न जैसा पुत्र उत्पन्न हुआ, जो रूप, गुणशील और आचार में सर्वथा अपने पिता के ही तुल्य था। पुराणकारों ने उनके चरित्र के इस पहलू को सम्पूर्णतया विस्मृत कर दिया है।

श्री कृष्ण सन्ध्या और अग्निहोत्र आदि दैनिक कर्तव्यों के पालन में कभी प्रमाद नहीं करते थे। महाभारत में स्थान-स्थान पर इसके उल्लेख मिलते है। दुर्योधन से सन्धिवार्ता के लिए जाते हुए कृष्ण जब-जब प्रातःकाल या सायंकाल होता है, तब-तब वे सन्ध्या और अग्निहोत्र करना नहीं भूलते। महाभारत में लिखा है -

प्रातरुत्थाय कृष्णस्तु कृतवान् सर्वआहिकम्।
ब्राह्मणैर भ्यनुज्ञातः प्रययौ नगरं प्रति।।
(म. भा. उद्योगपर्व 5, 87, 1)

प्रातःकाल उठकर कृष्ण ने आह्निक (सन्ध्या-हवन) आदि क्रियाएं की, पुनः ब्राह्मणों की आज्ञा लेकर नगर की ओर गए। इस प्रकार का एक अन्य श्लोक है -

कृत्वा पौर्वाह्निकं कृत्यं स्नातः शुचिरलङ्कृत।। उपतस्थे विवत्वन्तं पावकं च जनार्दनः।।
(म. भा. उद्योगपर्व 5, 81, 9)

''स्नान करके प्रातःकाल की आह्निक क्रियाएं की ...... आदि।'' अब इसे विडम्बना के अतिरिक्त और क्या कहें कि नित्य सन्ध्या योग के द्वारा सच्चिदानन्द ब्रह्म का ध्यान करने वाले और अग्निहोत्र के द्वारा देवताओं का यजन करने वाले, आर्य मर्यादा पालक, आदर्श महापुरुष कृष्ण को लोगों ने साक्षात् ईश्वर ही बना दिया।

कृष्णचरित्र की सर्वोपरि विशेषता उनकी राजनैतिक विचक्षणता और नीतिज्ञता है। उनका राजनीति के प्रति यह अनुराग किसी स्वार्थ की भावना से प्रेरित नहीं था, जैसा कि आजकल एक अनेक राजनैतिक नामधारी पुरुषों में दिखाई पड़ता है। और न ही उनकी राजनैतिक विचारधारा किसी संकुचित राष्ट्रीयता के सीमाक्षेत्र में बंधी हुई थी। उस समय वर्तमान युग में व्यापक सीमित राष्ट्रीय भावना का तो जन्म ही नहीं हुआ था। कृष्ण के इस क्षेत्र में प्रवेश करने का एकमात्र उद्देश्य था लोक कल्याण, विश्व कल्याण और अराजकता को मिटाकर आर्यविधि का संस्थापन। लोकोपकार की यही भावना लेकर वे इस क्षेत्र में प्रविष्ट हुए।

सर्वप्रथम उनकी दृष्टि अपने ही मथुरा जनपद के स्वेच्छाचारी, एकतंत्रशासन के प्रतिनिधि राजा कंस के ऊपर गई। उन्होंने पारिवारिक और व्यक्तिगत सम्बन्धों का विचार न करते हुए यादवों के हित को सर्वोपरि समझा और कंस के विनाश में ही सबका कल्याण देखा। कंस की मृत्यु के पश्चात् ही मथुरा के यादवों को अपनी सर्वांगीण उन्नति करने का अवसर मिला। कृष्ण का अभी एक कार्य पूर्णतया समाप्त भी न हुआ था कि जरासंध के आक्रमण होने प्रारम्भ हो गये। कंस के मारे जाने से जरासंध ने अनुमान लगा लिया था कि अब अधिक दिनों तक आर्यावर्त में अत्याचार, स्वेच्छाचार और अराजकता का राज्य नहीं चल सकता; क्योंकि कृष्ण के रूप

में सदाचार, स्वतन्त्रता, मर्यादा और धर्म, नीति तथा समाज का संरक्षक एक महान् लोकनायक उत्पन्न हो चुका था। कंस भी तो आखिर जरासन्ध का ही जमाता और उसी का अनुगामी था। कंसवध की घटना में जरासन्ध ने अपनी नीत और हथकण्डों को पराजित होते देखा। वह तुरन्त मथुरा पर चढ़ दौड़ा और एक बार ही नहीं, सत्रह बार उसने आक्रमण किए। कृष्ण के अपूर्व रणचातुर्य और उनके सफल सेनापतित्व में यादवों ने जरासन्ध की सेना के दांत खट्टे कर दिये। परन्तु जब कृष्ण ने ही यह समझ लिया कि शूरसेन प्रदेश सुरक्षा की दृष्टि से अधिक उत्तम नहीं है, तो उन्होंने यादव जाति के निवास के लिए द्वारिका जैसा भौगोलिक दृष्टि से सुदृढ़ आवासस्थान ढूंढ निकाला।

जरासन्ध के सेनापति शिशुपाल को प्रथम तो रुक्मिणी के विवाह के अवसर पर कृष्ण के द्वारा नीचा देखना पड़ा और द्वितीय बार जब राजसूय यज्ञ के प्रसंग में उसने अर्घ्य के पचड़े को लेकर यज्ञध्वंस करने और कृष्ण के किये कराये पर पानी फेरने का विचार किया तो उसे यमलोक पहुंचाकर कृष्ण ने अपने 'विनाशाय च दुष्कृताम्' रुपी महायज्ञ में एक और आहुति प्रदान की। जरासन्ध को समाप्त करने का अवसर इससे पूर्व ही उपस्थित हो गया था। 86 राजाओं को कैद कर और उनकी महादेव के सम्मुख बलि देने का जो पैशाचिक षडयन्त्र जरासन्ध ने कर रखा था, उसे कृष्ण जैसे धर्मात्मा कैसे सहन कर सकते थे? इस दुष्कृत्य में तो उसके समस्त अत्याचारों की चरम परिणति हो गई थी, अतः उसे सहन करना सर्वथा असम्भव था। ऐसा मनुष्य जाति का शत्रु जरासन्ध कृष्ण की नीति और चतुराई से भीम द्वारा मारा गया। न तो युद्ध करना पड़ा और न रक्तपात। सब काम शान्तिपूर्वक हो गया।

महाभारतीय युद्ध में भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य दुर्योधन आदि कौरव पक्ष के सभी महारथी वीरों का अन्त एक-एक करके हुआ और इस प्रकार कृष्ण के इस धर्म संस्थापन रूपी महायज्ञ में पूर्णाहुति लगी। युधिष्ठिर के धर्मराज्य संस्थापन के कार्य में श्रीकृष्ण का योगदान तो सर्वविदित ही है। कृष्ण की इस अपूर्व नीतिज्ञता और रणचातुरी से यह अनुमान लगाना कि वे युद्धलिप्सु थे अथवा समस्त देश को युद्ध की भयंकर और विनाशकारी ज्वालाओं में झोंककर तमाशा देखने वाले थे, अनुचित होगा। कृष्ण ने यथाशक्य युद्ध का विरोध किया, यह हम प्रत्येक प्रसंग में देखते हैं। उन्होंने न तो युद्ध को समस्या सुलझाने का एकमात्र उपाय ही समझा और न उसमें कूद पड़ने के लिए किसी को उत्साहित ही किया। यहां तक कि वैयक्तिक मानापमान की परवाह न करते हुए भी वे सन्धि का सन्देश लेकर हस्तिनापुर गये और चाहे उसमें उन्हें सफलता न भी मिली, परन्तु संसार को ज्ञात हो गया कि महात्मा कृष्ण सन्धि के लिए प्रयत्नशील थे और सन्धि के ही आकांक्षी थे। उन्होंने स्वयं कहा है कि वे इस पृथ्वी को युद्ध की विभीषिका से बचा हुआ ही देखना चाहते हैं।

यह ठीक है कि दुर्योधन की कुटिलता से उनकी बात नहीं मानी गई और युद्ध अपरिहार्य हो गया। परन्तु लोग यह भी जान गये कि पाण्डवों का पक्ष सत्य का है और दुर्योधन हठवंश मानव जाति के सर्वनाश में प्रवत्त हो रहा है। यह महत् कार्य कृष्ण की अपूर्व दूरदर्शिता और विलक्षण मेधावी बुद्धि से ही सम्पन्न हुआ। युद्ध प्रारम्भ होते ही उनका दृष्टिकोण बदल गया। अब वे युद्ध को क्षत्रियों के लिए खुला हुआ स्वर्ग का द्वार बतलाते हैं और उनका विश्वास है कि आततायियों का विनाश किये बिना कार्य नहीं चल सकता। रणक्षेत्र में उपस्थित होते ही अर्जुन में जो क्लीबता और हृदय दौर्बल्य उत्पन्न हो गया था। उसे महाराज श्रीकृष्ण ने अनाथों के उपयुक्त तथा स्वर्ग और कीर्ति का नाश करने वाला बतलाया। वास्तव में क्षात्र धर्म का यही प्राकृत रूप था, जिसे श्रीकृष्ण ने अत्यन्त ओजस्वी और प्रभविष्णु ढंग से निरूपित किया और जो आज विश्व के सम्मुख ''गीता'' के नाम से विद्यमान है।

यह है श्रीकृष्ण की राजनीतिज्ञता का किन्चित् दिग्दर्शन। उन्होंने जहां अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय महत्वपूर्ण प्रश्नों को सुलझाने में अपने जीवन का अधिकांश भाग लगाया, वहां उन्होंने सामाजिक प्रश्नों की भी अवहेलना नहीं की। श्री कृष्ण वर्णाश्रम धर्म के सबसे प्रबल समर्थक और शास्त्रीय मर्यादा के रक्षक थे। परन्तु इससे यह सिद्ध नहीं किया जा सकता कि वे किसी प्रकार की सामाजिक कट्टरता या अनुदारता के पोषक और गतानुगतिकता के समर्थक थे। उनकी सामाजिक धारणाएं उदारपूर्ण और नीतियुक्त होती थीं। उन्होंने सदा दलित और पीड़ित वर्ग का पक्ष ग्रहण किया। विदुर जैसे धर्मात्मा लोगों का उन्होंने सदा सम्मान किया। नारी वर्ग के प्रति उनकी बड़ी श्रद्धा थी। कुन्ती, गान्धारी, देवकी आदि पूजनीय, गरीयसी महिलाओं तथा सुभद्रा, द्रौपदी आदि कनिष्ठा देवियों के प्रति उनके हृदय में सदा श्रद्धा, सम्मान और आदर के भाव रहे। जानते थे कि मातृशक्ति का यथोचित सम्मान करने से ही देश की भावी सन्तान में श्रेष्ठ गुणों को लाया जा सकता है।

कृष्ण के व्यक्तित्व के इन विविध रूपों की समीक्षा कर लेने के पश्चात् भी उनके चरित्र की उस महनीयता और उदारता की ओर ध्यान आकृष्ट कराना आवश्यक है, जिसके कारण आध्यात्मिक क्षेत्र के महान् उपदेष्टा और योगेश्वर के रूप में उनका सर्वत्र सम्मान हुआ, हो रहा है और जब तक संसार में आर्य संस्कृति का कोई भी अनुयायी रहेगा, तब तक होता रहेगा। कृष्ण राजनीतिज्ञ भी थे, धर्मोपदेष्टा भी थे, परन्तु वास्तव में वे योगी थे और थे अध्यात्म पथ के अपूर्व साधक। उन्होंने कर्मयोग का ही उपदेश दिया और अपने जीवन में आचरण के द्वारा उसे ही प्रत्यक्ष कर दिखलाया।

वे ज्ञान और कर्म के समन्वय के पक्षपाती थे। यही आर्य संस्कृति और परम्परा की विशेषता है, जो कृष्ण के व्यक्तित्व में साकार हो उठी थी। सच्चिदानन्द के परम तत्व का साक्षात्कार कर लेने के बाद भी वे लोकमार्ग से च्युत नहीं हुए। क्योंकि वे गीता में कह चुके हैं कि पूर्णकाम हो जाने के पश्चात् भी योगी को कर्तव्य कर्म करने से विराम नहीं लेना चाहिए। इस प्रकार उन्होंने कर्मठ जीवन का पाठ पढ़ाया परन्तु साथ ही यह भी कहा कि हम अपने स्वरूप को समझे और योगी की भांति निष्काम भाव से कर्तव्य पालन में दत्तचित्त हों। यही श्रीकृष्ण के उपदेशों का सार है और यही उनके जीवन की महती सफलता का एकमात्र कारण है।

जीवन की इस विविधता और सर्वांगीणता के कारण कृष्ण चरित्र का स्थान, संसार में अद्वितीय है। स्वदेश ही क्या, विदेशों, में भी ऐसे सर्वगुण सम्पन्न महापुरुष का जन्म नहीं हुआ। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम के साथ अवश्य उनकी तुलना की जा सकती है परन्तु राम और कृष्ण के जीवन और उनकी परिस्थितियों में अन्तर था। राम स्वयं आदर्श राजा थे, परन्तु राजाओं के निर्माण एवं स्वयं सत्ता से दूर रहने वाले महापुरुष थे। राम के समक्ष वे कठिनाइयाँ नहीं थी, जो कृष्ण के समक्ष थीं। अतः किसी भी दृष्टि से क्यों न देखा जाये, कृष्ण के तुल्य मानव भूमण्डल में अद्यतन नहीं हुआ, यह निश्चित ही है।

पृष्ठ 1 का शेष

अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त हो

– प्रो. विट्ठलराव आर्य

आर्ष शिक्षा ही लार्ड मैकाले की शिक्षा का विकल्प है

– आचार्य धनंजय

नहीं है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से बच्चे का सर्वांगीण विकास होता है। उसे जहाँ विभिन्न विषय पढ़ाये जाते हैं वहीं पर आध्यात्मिक एवं नैतिक शिक्षा द्वारा उसके व्यक्तित्व का आन्तरिक एवं बाह्य विकास भी किया जाता है।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित आर्यजनों का आह्वान किया कि विश्व की प्राचीनतम संस्कृति वैदिक संस्कृति है। सः संस्कृति विश्वाराः....। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर महाभारत पर्यन्त पूरे विश्व में वैदिक संस्कृति का प्रभाव एवं प्रचलन रहा है। वैदिक संस्कृति पूरे विश्व को एक परिवार अर्थात् वसुधैव कुटुम्बकम् के रूप में देखती है। यह संस्कृति त्याग एवं परोपकार पर टिकी हुई है। वेदों में अनेक मंत्रों के माध्यम से परमपिता परमात्मा ने मानव मात्र को यह प्रेरणा दी है कि वे परस्पर मित्र भाव एवं प्रेम भाव से रहें। ऋग्वेद के संगठन सूक्त में कहा गया है – **संगच्छध्वम् संवदध्वम् संवोमनांसि जानताम, देवा भागम् यथा पूर्वे सं जानाना उपासते।** इस मंत्र का भावार्थ है कि हम सब एक साथ चलें, एक साथ बोलें, एक साथ सोचें और परस्पर एक–दूसरे के सहयोगी बनें। इसी प्रकार **मित्रसा, चक्षुसा.....** अर्थात् सब एक–दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें। आज वैदिक

संस्कृति का लोप हो रहा है। स्वार्थ की आंधी में और भौतिकवाद की चकाचौंध में मानव भटका हुआ है। वह एक–दूसरे के साथ नफरत, घृणा, वैमनस्य एवं द्वेष करता है। समाज का ताना–बाना छिन्न–भिन्न

शेष पृष्ठ 7 पर

ग्राम–रामलवास, जिला–चरखी दादरी, हरियाणा में

पर्यावरण शुद्धि के लिए यज्ञ एवं पौधारोपण का कार्यक्रम हुआ आयोजित

ग्लोबल वार्मिंग से बचने के लिए पर्यावरण को बचाना आवश्यक

– स्वामी आर्यवेश

गत् 6 अगस्त, 2021 को केडन इन्वेस्टमेंट द्वारा ग्राम–रामलवास, चरखी दादरी, हरियाणा में पर्यावरण शुद्धि के लिए यज्ञ एवं पौधारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने पर्यावरण को ग्लोबल वार्मिंग से बचाने पर बल दिया। स्वामी जी ने कहा कि वर्तमान समय में पूरे विश्व में पर्यावरण की समस्या एक चुनौती बनकर उभरी है। इस भयंकर समस्या से तभी पार पाया जा सकता है जब सारी दुनिया के लोग मिलकर बड़े स्तर पर पर्यावरण को बचाने के लिए अभियान चलाएँ। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए प्रतिदिन यज्ञ करने के साथ–साथ पौधारोपण बहुत जरूरी है। इसके साथ ही स्वामी जी ने कहा कि जो भी पौधा लगाया जाए उसका लालन–पालन भी आवश्यक है, जिस तरह से हम आप अपना तथा अपने बच्चों का जन्मदिन मनाते हैं, उसी प्रकार से उस पौधे की देख–रेख तथा उसकी वृद्धि का ख्याल रखना चाहिए। स्वामी जी ने पौधारोपण के सम्बन्ध में बताते हुए कहा कि पीपल, नीम, गिलोय जैसे पौधे अधिक से अधिक लगाए जाएं, क्योंकि कुछ पौधे पर्यावरण शुद्धि एवं औषधि के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं। स्वामी जी ने कहा कि पर्यावरण प्रदूषण बढ़ने से लोगों में तरह–तरह की बीमारियाँ बढ़ रही हैं। इन बीमारियों से तभी छुटकारा मिल सकेगा जब प्रत्येक घर में प्रतिदिन यज्ञ होगा और पर्यावरण की शुद्धि के लिए पौधारोपण को बढ़ावा दिया जायेगा। आज के पौधारोपण कार्यक्रम से पूर्व पर्यावरण की शुद्धि के लिए हवन यज्ञ का भी विशेष आयोजन किया गया था।

इस पौधारोपण कार्यक्रम में लगभग 11 हजार पौधे वितरित किए गए। कार्यक्रम के संयोजक श्री नरेंद्र सिंह आर्य जी ने कहा की समाज का यह दायित्व बनता है कि अधिक से अधिक पेड़–पौधे लगाकर वे अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करें। इस अवसर पर ग्राम–झोझूकलां के सरपंच श्री दलवीर सिंह गांधी, पूर्व सरपंच श्री सुरेश कुमार, श्री सत्यनारायण शर्मा, श्री मदन लाल शर्मा, श्री बलवंत, श्री जितेंद्र, श्री लीलू राम, श्री विनोद सेठ, श्री मुकेश सेठ, श्री योगेश कुमार, श्री ईश्वर राठी अनूप, श्री रमेश सहित अनेक लोग उपस्थित रहे। यज्ञ के यजमान के रूप में श्री नरेन्द्र सिंह आर्य के सुपुत्र श्री योगेश कुमार तथा इस कार्यक्रम के संयोजक के रूप में प्रसिद्ध पत्रकार श्री पवन शर्मा ने अपने दायित्व को कुशलता के साथ निभाया।

यज्ञ के उपरान्त उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने पर्यावरण के महत्व पर प्रकाश डाला और उन्होंने बताया कि कोरोनाकाल में देश के लगभग ढाई से तीन हजार ग्रामों व शहरों

में पर्यावरण शुद्धि महाभियान के माध्यम से यज्ञों का आयोजन कराया गया जिसके प्रति लोगों ने अपनी विशेष श्रद्धा व्यक्त की और घी, सामग्री आदि हव्य पदार्थ यज्ञ के लिए लोगों ने अपनी ओर से उपलब्ध कराये। स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से इस पूरे वर्ष में एक लाख पौधे लगाने का निर्णय किया गया है। जो देशभर में आर्य समाज की इकाईयाँ, संस्थाएँ और आर्यजन पूरा करेंगे। आज का पौधारोपण कार्यक्रम भी उसी अभियान का एक हिस्सा है। प्रसिद्ध समाजसेवी एवं श्री दलवीर सिंह गांधी ने स्वामी आर्यवेश जी तथा स्वामी आदित्यवेश जी के सम्मान में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारा समाज सदैव ऐसे महान संन्यासियों से ही मार्गदर्शन एवं प्रेरणा लेता रहा है और आज हमें बड़ी खुशी है कि स्वामी आर्यवेश जी तथा उनके विशेष सहयोगी, तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी यज्ञ एवं वृक्षारोपण हेतु हमारे मध्य विराजमान हैं। उन्होंने शॉल और माल्यार्पण के द्वारा स्वामी जी का अभिनन्दन किया। स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी तथा अन्य महानुभावों के कर–कमलों से पौधारोपण भी कराया गया और इस अभियान को निरन्तर जारी रखने का संकल्प सभी लोगों ने लिया। अन्त में श्री नरेन्द्र सिंह आर्य ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए स्वामी जी को आश्वस्त किया कि वे आर्य समाज के प्रत्येक अभियान में बढ़–चढ़कर सहयोग करेंगे। श्री पवन शर्मा ने भी स्वामी जी के यहाँ पधारने पर विशेष आभार व्यक्त किया।

हरियाणा सरकार के पूर्व मंत्री श्री हीरानन्द जी आर्य के 84वें जन्मदिवस के अवसर पर 'स्मृति ग्रन्थ' का किया गया विमोचन

पूर्व मंत्री स्व. श्री हीरानन्द जी महर्षि दयानन्द जी के सच्चे सिपाही थे

– स्वामी आर्यवेश

हरियाणा सरकार में लोहारू से चार बार विधायक तथा मंत्री रहे स्व. श्री हीरानन्द आर्य जी के 84वें जन्मदिवस के अवसर एक भव्य स्मृति ग्रन्थ 'एक सहज व्यक्तित्व' का विमोचन जाट धर्मशाला, भिवानी में 11 अगस्त, 2021 को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों द्वारा किया गया। इस ग्रन्थ को तैयार करने में हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के पूर्व सह–सचिव व श्री हीरानन्द जी के बेहद नजदीकी रहे श्री मनीराम खरबास जी ने विशेष पुरुषार्थ किया है। पुस्तक में श्री हीरानन्द जी के करीबी व्यक्तियों, समाचार पत्रों तथा विधानसभाओं की कार्यवाही के संदर्भों को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

पुस्तक विमोचन समारोह के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने स्व. श्री हीरानन्द जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि श्री हीरानन्द जी एक दक्ष प्रशासक एवं संवेदनशील व्यक्तित्व के धनी थे। स्वामी जी ने कहा कि वे न केवल एक राजनेता थे बल्कि स्वामी दयानन्द जी के एक सच्चे सिपाही और सच्चे आर्य थे। स्व. श्री हीरानन्द जी के जीवन पर स्वामी दयानन्द जी के विचारों एवं कार्यों का बहुत गहरा प्रभाव था। यद्यपि स्व. श्री हीरानन्द जी आर्य अत्यन्त सादगी एवं सरलता से ओत–प्रोत व्यक्तित्व के धनी थे, किन्तु वे निर्भीक, साहसी एवं दूरदर्शी राजनेता भी थे। स्वामी जी ने उनके साथ अपने व्यक्तिगत अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि वे सामाजिक कार्यों में अपनी राजनीतिक सीमाओं को तोड़कर हमेशा अग्रणी भूमिका निभाते थे। जे.पी. आन्दोलन से लेकर हरियाणा में चलाये गये शराबबन्दी आन्दोलन में जिस प्रकार से श्री हीरानन्द जी ने भाग लिया और सरकार के विरुद्ध भी आवाज उठाने में उन्होंने कोई संकोच नहीं किया। इससे उनकी निर्भीकता का परिचय मिलता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि उनके जीवन से हम सभी को प्रेरणा लेकर समाज में कार्य करने का प्रयास करना चाहिए। सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने मंच के माध्यम से प्रस्ताव रखा कि श्री हीरानन्द आर्य जी के जीवन कार्यों से सम्बन्धित एक मंच तैयार किया जाये और उस मंच के माध्यम से प्रतिवर्ष कोई न कोई ठोस कार्यक्रम आयोजित किये जायें जिससे लोगों को उनके कार्यों एवं व्यक्तित्व के बारे में पता चल सके।

इस अवसर पर श्री एन.के. जैन एडवोकेट ने स्व. श्री हीरानन्द जी के जीवन पर लिखी गई पुस्तक की सराहना करते हुए कहा कि हमें पूरा विश्वास है कि इस पुस्तक को पढ़कर युवा पीढ़ी को एक सच्चे सामाजिक एवं राजनीतिक नेता के गुणों से सीख लेने का अवसर प्राप्त होगा। ऐसे महान राजनेता को याद करना हम सबका दायित्व एवं कर्त्तव्य है। इस अवसर पर श्री ओम प्रकाश, डॉ. निरंजन रोहिल्ला, आचार्य इन्द्रदेव, प्रो. मनोज सिवाच, श्रीमती बिमला आर्या धर्मपत्नी श्री धर्मपाल सिंह, डॉ. के. डी. शर्मा तथा अन्य लोगों के साथ–साथ स्व. श्री हीरानन्द जी आर्य का पूरा परिवार सम्मिलित रहा। इस पूरे कार्यक्रम का संयोजन चौ. हीरानन्द जी आर्य के सुयोग्य सुपुत्र विंग कमांडर श्री संदीप आर्य ने किया। मंच का संचाल प्रो. मनोज सिवाच तथा परिवार की ओर से धन्यवाद ज्ञापन का दायित्व स्व. आर्य जी की सुपुत्री प्रिं. सुनीता आर्या जी ने संभाला। कार्यक्रम में आर्य जी के साढ़ू और प्रखर किसान नेता श्री धर्मपाल सिंह एडवोकेट चिड़ावा, प्रो. भूपसिंह आर्य, रिटायर्ड एस.डी.एम. श्री इन्दर सिंह आर्य, आर्य प्रतिनिधि राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, श्री अजीत सिंह एडवोकेट पूर्व विधायक झज्जर, श्री धर्मवीर शास्त्री, प्रधान आर्य समाज लोहारू, श्री रामावतार आर्य फरटिया, श्री अजय शास्त्री भांडवा, श्री बाबूलाल आर्य जूई, श्री दयानन्द आर्य रोहतक, प्रो. एन.पी. गौड़ बहल, श्री अशोक आर्य बहल, श्री जय सिंह जांगड़ा बहल, श्री ओम प्रकाश भिवानी आदि गणमान्य महानुभाव कार्यक्रम में उपस्थित थे। स्व. आर्य जी के छोटे भाई श्री दयानन्द आर्य ने आगन्तुकों का अभिवादन किया तथा स्व. आर्य जी के सुपुत्र श्री संदीप आर्य ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी को आयोजकों की ओर से शॉल एवं चाँदी का एक सिक्का भेंटकर सम्मानित किया गया। उनके अतिरिक्त ग्रन्थ के लेखक श्री मनीराम खरबास तथा सहयोगी डॉ. निरंजन सिंह रोहिल्ला, श्री इन्द्रदेव शास्त्री, श्री एन.के. जैन आदि को भी शॉल एवं चाँदी का सिक्का देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

श्रीमद्दयानन्द आर्ष गुरुकुल न्यास परिषद् के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य व गुरुकुल पौंधा के आचार्य धनंजय जी की उपस्थिति में समिति के अध्यक्ष श्री सुधाकर गुप्ता व अन्य पदाधिकारियों ने रखा प्रस्ताव

दयानन्द भवन समिति, दयानन्द नगर मलकपेट, हैदराबाद में वेद पाठशाला गुरुकुल प्रारम्भ करने का लिया संकल्प

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के यशस्वी प्रधान एवं सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य से विचार–विमर्श के पश्चात् दयानन्द भवन समिति, दयानन्दनगर मलकपेट, हैदराबाद की ओर से स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी व आचार्य धनंजय जी 8 अगस्त, 2021 को दयानन्द भवन समिति के मलकपेट स्थित भवन में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। यहाँ पहुँचने पर समिति के अध्यक्ष श्री सुधाकर गुप्ता व उनके अन्य साथियों ने सभी अतिथियों का अभिनन्दन किया।

इस अवसर पर आचार्य प्रियदत्त शास्त्री व आचार्य हरिकिशन वेदालंकार द्वारा विशेष यज्ञ सम्पादित किया गया। यज्ञ के उपरान्त सभी यजमानों को स्वामी प्रणवानन्द जी व स्वामी आर्यवेश जी ने आशीर्वाद दिया। शांति पाठ के पश्चात् सभी विद्वानों ने उपस्थित आर्यजनों को उपदेशामृत का पान कराया।

इस अवसर पर दयानन्द भवन समिति के अध्यक्ष श्री सुधाकर गुप्ता ने कहा कि आज के इस विशेष कार्यक्रम में स्वामी जी महाराज को हमने एक विशेष प्रयोजन से शेष पृष्ठ 6 पर

पृष्ठ 5 का शेष

दयानन्द भवन समिति, दयानन्द नगर मलकपेट, हैदराबाद में वेद पाठशाला गुरुकुल प्रारम्भ करने का लिया संकल्प

यहां आमंत्रित किया है। हम चाहते हैं कि इस भवन में पुनः वेद पाठशाला अर्थात् गुरुकुल प्रारम्भ हो। हमारी समिति इस विषय में पूरी तरह सहमत है स्वामी जी महाराज हमारी भावनाओं के अनुरूप यदि गुरुकुल अर्थात् वेद पाठशाला शुरू करते हैं तो हम जहाँ उनके कृतज्ञ रहेंगे वहीं उनकी सभी शर्तों एवं अपेक्षित सहयोग को भी सहर्ष स्वीकार करेंगे। प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने इस अवसर पर दयानन्द भवन की पृष्ठभूमि एवं इतिहास का परिचय देते हुए कहा कि सन् 1968 में हैदराबाद में आयोजित सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन में प्राप्त दानराशि में से बची हुई राशि का उपयोग इस विशाल भवन के बनाने में किया गया था। इस भवन का शिलान्यास वीतराग संन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी जी ने किया था तथा उनके साथ श्री घनश्याम सिंह गुप्त जो सार्वदेशिक सभा के प्रधान थे वे भी उपस्थित रहे। बाद में इस भवन का लोकार्पण प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री जलगम वेंगला राव के कर कमलों से हुआ था। यहाँ उपदेशक महाविद्यालय का शुभारम्भ किया गया था जिसका संचालन काफी लम्बे समय तक तेलगू के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य गोपदेव जी ने संभाला था। उनके देहावसान के पश्चात् उपदेशक विद्यालय आगे नहीं चल सका और यहाँ सामान्य स्कूल प्रारम्भ कर दिया गया, किन्तु विशेष प्रशंसा की बात यह है कि इस दयानन्द भवन समिति के वर्तमान अध्यक्ष श्री सुधाकर जी गुप्ता तथा उनके समस्त प्रतिष्ठित पदाधिकारियों ने इस भवन को और इस स्थान को पूरी तरह से सुरक्षित एवं संरक्षित रखा। आज उन्होंने यहाँ वेद पाठशाला अर्थात् गुरुकुल प्रारम्भ करने का प्रस्ताव रखकर महान उदारता का परिचय दिया है और मैं स्वामी प्रणवानन्द जी से प्रार्थना करता हूं कि यहाँ एक शानदार गुरुकुल प्रारम्भ करें। प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने कहा कि मैं भली भांति जानता हूँ कि गुरुकुल प्रारम्भ होने के पश्चात् स्वामी प्रणवानन्द जी व उनके आचार्यों को यहां गुरुकुल चलाने में किसी प्रकार की कोई कठिलाई नहीं होगी, क्योंकि श्री सुधाकर गुप्ता और उनके अन्य सहयोगी सक्षम भी हैं और दानवीर भी हैं, वे तन–मन–धन से गुरुकुल का सहयोग निरन्तर करते रहेंगे। उनकी भावना मात्र यह है कि यहां पर अच्छा गुरुकुल चले जिसमें वैदिक विद्वान् तैयार हों।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने भी प्रो. विट्ठलराव आर्य जी के विचारों का अनुमोदन करते हुए कहा कि एक ऐतिहासिक संस्था जिसका शुभारम्भ महात्मा आनन्द स्वामी जैसे वीतराग संन्यासी के कर–कमलों से हुआ हो और जिसे अनेक समाजसेवी एवं दानवीरों ने अपनी पवित्र कमाई से दान देकर सींचा हो उसमें गुरुकुल प्रारम्भ करना एक बहुत बड़ा यज्ञ होगा। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी प्रणवानन्द जी इस कार्य को पूरी गम्भीरता एवं जिम्मेदारी के साथ प्रारम्भ करेंगे तो निश्चित रूप से हैदराबाद की ऐतिहासिक धरती से गुरुकुल शिक्षा का एक नया अध्याय शुरू होगा। स्वामी जी ने कहा कि यही वह धरती है जहां निजाम के अत्याचारों के विरुद्ध आर्य समाज ने ऐतिहासिक आन्दोलन किया था और आर्य समाज की दुंदुभी बजी थी। ठीक इसी प्रकार देश के अन्य गुरुकुलों के मुकाबले यदि विशेष प्रयत्न किये गये तो यह गुरुकुल भी अपना स्थान इतिहास के पन्नों पर अवश्य बनायेगा।

आचार्य धनंजय जी ने बड़े जोश–खरोश के साथ गुरुकुल खोलने तथा उसे उन्नति के शिखर तक ले जाने की घोषणा करते हुए सभी उपस्थित आर्यजनों में एक नये उत्साह का संचार कर दिया। उन्होंने कहा कि इस गुरुकुल में छोटे बच्चों का अध्ययन तो होगा ही तथा इसके साथ–साथ बड़ी आयु के लोगों को भी वेद–वेदांग एवं आर्ष ग्रन्थों के पठन–पाठन की सुविधा उपलब्ध कराई जायेगी। उन्हें योगाभ्यास, कर्मकाण्ड एवं व्याख्यानशैली आदि भी सिखाई जायेगी। अन्त में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने दयानन्द भवन समिति के समस्त अधिकारियों तथा प्रो. विट्ठलराव आर्य जी का विशेष रूप से धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि मैं आप लोगों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ कि आपने इतना सुन्दर और पूरी तरह से सुरक्षित एवं संरक्षित भवन हमें सौंपकर गुरुकुल प्रारम्भ करने के लिए चुना है। मैं ईश्वर को साक्षी मानकर यह आश्वासन देता हूँ कि आपलोगों की भावना के अनुरूप यहाँ कुछ सामान्य औपचारिकताएँ पूरी करने के पश्चात् बहुत शीघ्र गुरुकुल प्रारम्भ किया जायेगा और जैसे दक्षिण भारत से उत्तर भारत के गुरुकुलों में विद्यार्थी पढ़ने जाते हैं उसी प्रकार एक समय ऐसा आयेगा जब उत्तर भारत से प्रतिभावान विद्यार्थी इस गुरुकुल में पढ़ने के लिए आया करेंगे। इस दयानन्द भवन समिति के अध्यक्ष श्री सुधाकर गुप्ता जी व उनके अन्य सभी पदाधिकारी एवं सदस्यों ने जिस उदारता, निष्कामता एवं सात्विकता के साथ यह भव्य भवन गुरुकुल संचालन के लिए हमें सौंपने का संकल्प किया है। मैं उसे हृदय से स्वीकार करते हुए इसे क्रियान्वित करने के लिए आज से ही प्रयत्न प्रारम्भ करूंगा। स्वामी प्रणवानन्द जी ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का भी विशेष आभार व्यक्त किया कि उनका मार्गदर्शन इस महत्त्वपूर्ण कार्य में हमें मिला है और भविष्य में भी मिलता रहेगा। कार्यक्रम के अन्त में दयानन्द भवन समिति की ओर से दोनों स्वामी जी व आचार्य जी को वस्त्र, माला व दक्षिणा देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के उपरान्त सुन्दर सहभोज की व्यवस्था थी जिसमें सभी ने प्रसाद ग्रहण किया।

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्चा होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :–011–23274771, 23260985

आर्य जगत के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् आचार्य भवभूति जी को श्रद्धांजलि देने एवं उनकी धर्मपत्नी आचार्या नीरजा जी व उनके सुपुत्रों का हालचाल जानने के लिए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, प्रो. विट्ठलराव आर्य जी व आचार्य धनंजय जी आर्ष शोध संस्थान, अलियाबाद (तेलंगाना) पहुँचे

विदित हो कि बटुक विकास केन्द्र गुरुकुल अलियाबाद के संचालक एवं लब्धप्रतिष्ठ विद्वान आचार्य भवभूति जी का कार दुर्घटनाग्रस्त हो जाने से असामयिक दुःखद निधन हो गया था। उनके साथ उनकी धर्मपत्नी आर्ष कन्या गुरुकुल अलियाबाद की आचार्या नीरजा जी व उनके तीनों सुपुत्र भी कार में थे। दुर्घटना इतनी जोर से हुई कि आचार्य भवभूति जी तथा उनका पूरा परिवार भयंकर चोटों से घायल हो गये और अस्पताल जाने पर आचार्य भवभूति जी का देहावसान हो गया और आचार्या नीरजा तथा उनके तीनों पुत्र ईश्वर की कृपा से और डॉक्टरों के विशेष प्रयत्न से बच गये।

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के तत्वावधान में आयोजित विशेष कार्यक्रम में दो दिन के प्रवास पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी तथा आचार्य धनंजय जी 8 व 9 अगस्त, 2021 को हैदराबाद गये थे, वहाँ से 9 अगस्त को प्रातः प्रो. विट्ठलराव आर्य जी के साथ ये तीनों महानुभाव स्व. आचार्य भवभूति जी को श्रद्धांजलि देने एवं उनके परिवार का कुशल क्षेम तथा हाल–चाल जानने के लिए आर्ष शोध संस्थान अलियाबाद पहुँचे। वहाँ इस संस्थान के संचालक प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य आनन्द प्रकाश जी ने इन सभी की अगवानी की और आचार्या नीरजा जी से उनके निवास पर मिलवाया। आचार्या नीरजा जी व उनके तीनों सुपुत्र स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं और ईश्वर की महती कृपा से उनका स्वास्थ्य धीरे–धीरे ठीक होता जा रहा है। आचार्या नीरजा जी के आत्मबल एवं विवेक से निःसंदेह विशेष प्रेरणा मिलती है उन्होंने न केवल स्वयं को संभाला अपितु अपने तीनों पुत्रों को भी वे निरन्तर उत्साहित व प्रेरित करती रहती हैं। उनके तीनों पुत्रों में तत्त्वदर्शी सबसे बड़े, ब्रह्मदर्शी मझले व आत्मदर्शी छोटे हैं। आचार्या नीरजा जी का कहना था कि वह अपने पुत्रों को अपने पिता के पदचिन्हों पर चलाते हुए उन्हें विद्वान् बनाना चाहती हैं और उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए और गुरुकुलों को चलाने का निश्चय रखती हैं। आचार्या नीरजा जी व उनके परिजनों से मिलने के पश्चात् स्वामी द्वय एवं प्रो. विट्ठलराव आर्य जी आदि आचार्य आनन्द प्रकाश जी के अध्ययन कक्ष में गये और उनके लेखन कार्य को देखा। निःसंदेह आर्य जगत में इस समय जितना बड़ा लेखन का कार्य आचार्य आनन्द प्रकाश जी कर रहे हैं उतना शायद ही कोई दूसरा विद्वान् कर रहा हो। आचार्य आनन्द प्रकाश जी ने वैदिक वांगमय के निर्वचन कोष को तैयार करने के लिए लगभग 22 हजार पृष्ठ अपने कलम से लिखते हैं जो अभी प्रकाशित होने बाकी हैं। उनका मानना है कि इन्हें प्रकाशित कराने में लगभग एक करोड़ रुपया खर्च होगा। क्या आर्य समाज का कोई भामाशाह इस ऐतिहासिक एवं महान कार्य की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेने के लिए आगे आयेगा। आर्य समाज में अनेक ऐसे दानवीर हैं जिनके लिए यह कोई मुश्किल कार्य नहीं है। वे अकेले अपने व्यय से आचार्य आनन्द प्रकाश जी के ग्रन्थों को प्रकाशित करा सकते हैं। आचार्य आनन्द प्रकाश जी ने सभी को अपने साहित्य का एक–एक सैट भेंट भी किया।

ज्ञातव्य है कि आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना की ओर से सभा प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य ने स्व. आचार्य भवभूति जी की अन्त्येष्टि के उपरान्त सभा की ओर से एक लाख रुपये की राशि उनके परिवार के सहयोग हेतु देकर अन्य आर्यजनों से भी अपील की थी कि वे भी इस अवसर पर आचार्य जी के परिवार का दिल खोलकर सहयोग करें। उनके अपील पर लगभग 10 लाख रुपया अन्य आर्य समाजों व संस्थानों ने भी सहयोगार्थ प्रदान किया था। आर्ष शोध संस्थान अलियाबाद से वापिस पं. नरेन्द्र भवन में आयोजित कार्यक्रम में सभी संन्यासी व विद्वान् सम्मिलित हुए।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

2 अगस्त, 2021 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम में योग का कार्यक्रम आयोजित

युवा योग को अपनाकर स्वास्थ्य लाभ, मानसिक शांति व आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त करें

– स्वामी आर्यवेश

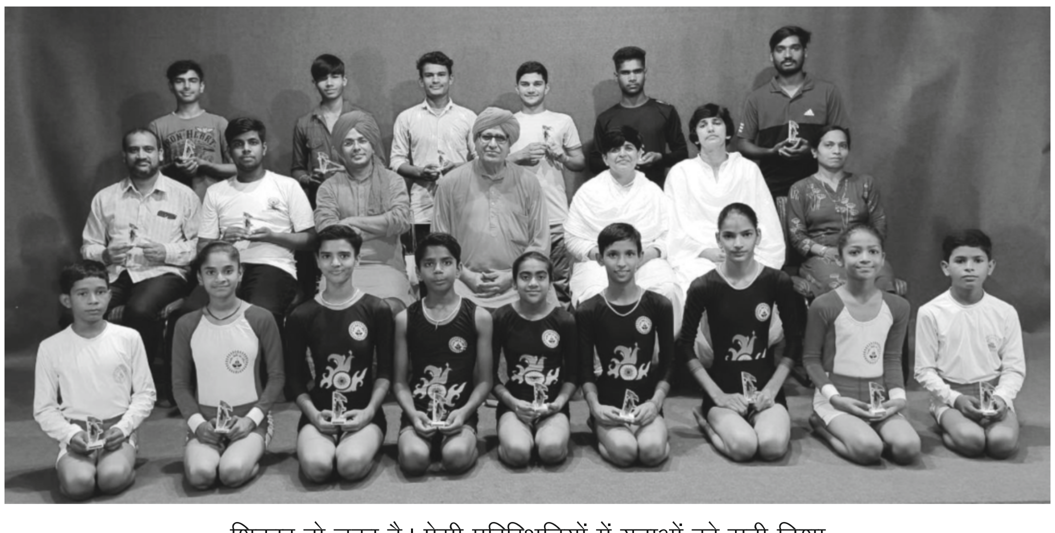

2 अगस्त 2021, स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली में योग के राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी पहुंचे। मिशन आर्यावर्त व मानव निर्माण मंच के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस संक्षिप्त कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने युवाओं को योग से जोड़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि युवाओं के भविष्य को सुधारने तथा उन्हें बुराइयों व व्यसनों से बचाने के लिए योग को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए। योग जहां शारीरिक रूप से स्वस्थ रखता है वहीं मानसिक शांति व आध्यात्मिक उन्नति का आधार भी है।

आर्य समाज कोविड रिलीफ अभियान के राष्ट्रीय संयोजक स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि आर्य समाज युवा निर्माण अभियान को और ज्यादा तेज करेगा। आज के डिजिटल युग में युवाओं के दिग्भ्रमित होने की संभावना ज्यादा बढ़ गई है। बाहरी वातावरण भी वैचारिक प्रदूषण का शिकार हो चुका है। ऐसी परिस्थितियों में युवाओं को सही दिशा देने के लिए आर्य समाज अपने कार्यक्रमों में युवाओं को केंद्रित करके कार्य योजना बनाएगा।

राष्ट्रीय स्तर पर कई प्रतियोगिताओं में प्रतिनिधित्व कर चुके खिलाड़ियों ने आज कठिन आसनों का प्रदर्शन भी किया। इस योग प्रदर्शन में रोहतक, फरीदाबाद, पलवल, झज्जर, बवाना दिल्ली के प्रतिभागी शामिल रहे। कार्यक्रम मानव निर्माण मंच से जुड़े श्री श्याम आर्य ने सम्पन्न करवाया। उनका सहयोग सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् दिल्ली के प्रमुख व्यायाम शिक्षक श्री उत्तम आर्य, टिटौली से श्री अरुण आर्य, पलवल से श्री पवन आर्य, बहादुरगढ़ से श्री जय प्रकाश ने किया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, बेटी बचाओ अभियान की संयोजक प्रवेश आर्या, अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, ऋषिराज शास्त्री ने सभी प्रतिभागियों को सम्मानित भी किया।

इस अवसर पर सृष्टि, खुशी, शिवा, प्रदीप, काफी, काजल, करुणा, दीपांशु, अरुण आर्य, लावण्या, पुष्कर, पवन आर्य, आकाश, उत्तम आर्य, ऋतु, जयप्रकाश,सचिन, मोनू, बिजेंद्र, प्रेम सिंह आदि मुख्य रुप से उपस्थित रहे।

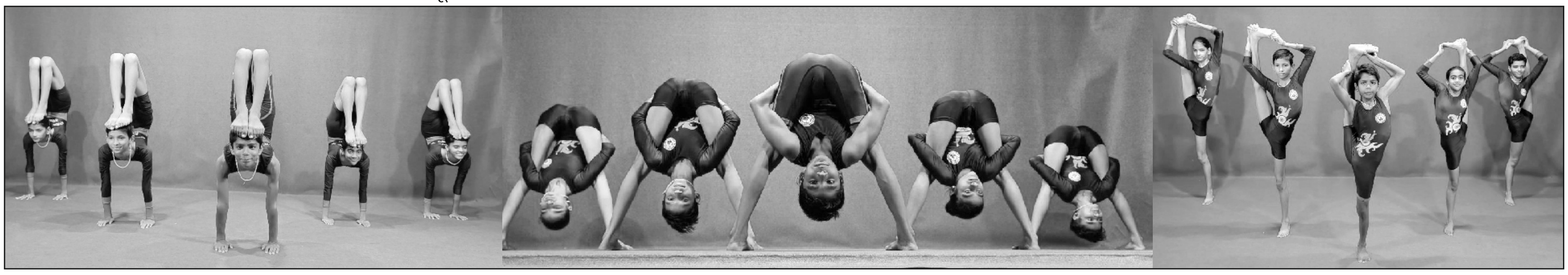

पृष्ठ 4 का शेष

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना प्रदेश के तत्वावधान में ......

होता जा रहा है। पूरे विश्व में साम्प्रदायिकता, नस्लवाद, जातिवाद, संकीर्णता, क्षेत्रवाद, साम्राज्यवाद एवं धन व राज्यों को हड़पने की होड़ लगी हुई है। ऐसे में वैदिक संस्कृति को पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है। भारत में सर्वप्रथम इस विषय पर प्रयास प्रारम्भ होने चाहिए, क्योंकि वैदिक संस्कृति का सर्वाधिक प्रभाव इसी देश में रहा है। आज स्कूलों की शिक्षा व आम व्यवहार में जिस प्रकार से पाश्चात्य संस्कृति का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। उससे भावी पीढ़ी पूरी तरह से दिग्भ्रमित हो रही है। देश के बच्चों एवं युवाओं में संस्कृति एवं संस्कार पूरी तरह से नगण्य है, उनके रहन–सहन, खान–पान, वेशभूषा और मानसिकता में भोगवादी संस्कृति अपनी पूरी पैठ जमा चुकी है। उन्हें अपने इतिहास और सांस्कृति की धरोहर से परिचित नहीं कराया जाता जिससे वे इनसे पूरी तरह अनभिज्ञ रहते हैं। अतः अब समय आ गया है कि भारत से अपसंस्कृति (अश्लीलता, नग्नता, कामुकता एवं फूहड़पन से ओत–प्रोत सिनेमाओं तथा पत्र–पत्रिकाओं और गूगल पर परोसी जा रही स्वच्छन्द सामग्री) को देश छोड़ना होगा। इसके लिए युद्ध स्तर पर जन–चेतना अभियान एवं आन्दोलन चलाया जाना चाहिए। सरकारी तन्त्र पर दबाव बनाकर अपसंस्कृति पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगवाया जाये। यह कार्य आर्य समाज को पूरे राष्ट्र का नेतृत्व करते हुए करना चाहिए। इसी प्रकार अंग्रेजी की अनिवार्यता भी हमारे देश की प्रतिभाओं के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। दुनिया के अनेक देशों में अंग्रेजी की अनिवार्यता नहीं है और वहाँ की अपनी भाषा में सभी कार्य होते हैं। जितनी मात्रा में अंग्रेजी की आवश्यकता है, उसकी पूर्ति के लिए अंग्रेजी का अध्ययन ऐच्छिक कर दिया जाये तो वह पूर्ति भी आसानी से हो सकती है। हम अंग्रेजी या किसी अन्य विदेशी भाषा के विरोधी नहीं हैं किन्तु किसी भी स्तर पर उसकी अनिवार्यता का क्या औचित्य है? भारत में मेडिकल, इंजीनियरिंग या तकनीकी शिक्षा समस्त भारतीय भाषाओं में दी जाये। पूरे भारत को एक सूत्र में बांधने के लिए संविधान में घोषित देवनागरी राष्ट्रभाषा हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप में रखा जाये और जो लोग अंग्रेजी या अन्य भाषाएं पढ़ना चाहते हैं उन्हें पढ़ने का अवसर दिया जाये, किन्तु इसकी अनिवार्यता पूरी तरह समाप्त की जाये। आश्चर्य की बात है कि कोर्ट में जज और वकील परस्पर अंग्रेजी में बहस करते हैं किन्तु मुकदमें का मुव्वकिल अंग्रेजी न जानने के कारण किंकर्त्तव्य विमूढ़ खड़ा रहता हैं उसको यह नहीं मालूम होता है कि उसका वकील उसके मुकदमें के लिए कौन सा तर्क दे रहा है यह बड़ी विडम्बना है। स्वामी आर्यवेश जी ने स्थाई रूप से दीर्घकाल तक देश की उन्नति एवं विकास के लिए गुरुकुल शिक्षा का भी प्रबल समर्थन किया और उन्होंने कहा कि गुरुकुल शिक्षा आवासीय शिक्षा है। यह लड़कियों के लिए अलग और लड़कों के लिए अलग विद्यालयों एवं छात्रावासों के साथ पूरे देश में लागू की जानी चाहिए। युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थप्रकाश में शिक्षा के सम्बन्ध में लिखा है कि शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए और इसके लिए वह कहते हैं कि यह राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि प्रत्येक बालक विद्यालय (गुरुकुल) में जाये। दूसरे नम्बर पर स्वामी दयानन्द जी ने सभी के लिए समान शिक्षा का समर्थन किया तथा इसके साथ–साथ वे शिक्षा को पूर्णतया निःशुल्क देने के पक्षकार हैं। स्वामी जी कहते हैं कि चाहे कोई राजकुमार हो या राजकुमारी, चाहे दरिद्र की सन्तान सबको समान खान–पान एवं तुल्य आसन मिलना चाहिए। इस तरह स्वामी दयानन्द जी की दृष्टि में शिक्षा अनिवार्य, समान व निःशुल्क होनी चाहिए। शिक्षा का पूरा खर्च राष्ट्र वहन करे। इसका विशेष लाभ यह होगा कि जब गरीब और अमीर के बच्चे एक समान व्यवस्था में रहते हुए साथ मिलकर खाने, खेलने, पढ़ने व लम्बे समय तक इक्ट्ठे रहने के कारण उनमें जातीय विद्वेष या साम्प्रदायिक कट्टरता समाप्त होगी और जब वे विद्यालय से अपनी पढ़ाई पूरी करके निकलेंगे तो उसमें किसी को भी यह शिकायत करने की जरूरत नहीं होगी कि उनके बच्चे को शिक्षा में समान अवसर प्राप्त नहीं हुआ। उस स्थिति में चाहे जाति, चाहे मजहब, चाहे आर्थिक व शैक्षिक पिछड़ेपन के आधार पर जो आरक्षण की व्यवस्था की जाती है। उस स्थिति में इसकी भी आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि जो योग्य होगा वह अपने प्रयास और पुरुषार्थ से सब अवसर प्राप्त कर सकेगा। ऋषि दयानन्द जी दूरदृष्टा थे और उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में समानता का दृष्टिकोण इसलिए रखा था ताकि सारा समाज उन्नति की ओर प्रगति कर सके। कोई आर्थिक, शैक्षिक अथवा जातीय आधार पर अभिजात्य के द्वारा पीछे न धकेला जा सके। उन्होंने सबके लिए समान अवसर के द्वार खोल दिये थे। किन्तु दुर्भाग्य यह है कि 75 वर्ष की स्वतंत्रता के बाद भी आज न अनिवार्य शिक्षा, न समान शिक्षा और न ही निःशुल्क शिक्षा है। भारतीय संस्कृति के मूलाधार यहाँ के समस्त आर्ष ग्रन्थ हैं। जिनमें वेद, वेदांग, उपवेद, उपनिषद् और स्मृतियाँ आती हैं। यदि संस्कृत भाषा देश के नवयुवक नहीं जानेंगे तो वे अपने मूल ग्रन्थों को जो संस्कृत में उपलब्ध हैं कैसे पढ़ पायेंगे और कैसे उनसे प्रेरणा प्राप्त कर सकेंगे। स्वामी आर्यवेश जी ने पूरे देश के आर्यों का आह्वान किया कि आगामी श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर सब लोग स्वदेशी, स्वभाषा, स्वसंस्कृति एवं प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनः स्थापित करने का संकल्प लें और इसके लिए अभियान प्रारम्भ करें।

कार्यक्रम के अन्त में सभी विद्वानों का शॉल एवं मोतियों की माला के साथ विशेष सम्मान किया गया। आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य, सभा के उपप्रधान ठाकुर लक्ष्मण सिंह, उपप्रधान श्री हरिकिशन वेदालंकार, मंत्री श्री वेंकट रघुरामुलु एडवोकेट, कोषाध्यक्ष श्री अशोक श्रीवास्तव, श्री रामचन्द्र कुमार आदि ने विद्वानों को शॉल भेंटकर सम्मानित किया।

सभा के कार्यकर्ता श्री अमर आर्य के सुपुत्र का नामकरण किया गया

आर्य प्रतिनिधि आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के कार्यकर्ता श्री अमर आर्य के नवजात सुपुत्र का स्वामी आर्यवेश जी तथा स्वामी प्रणवानन्द जी ने नामकरण कर उसे अथर्व आर्य नाम दिया। इस अवसर पर अमर आर्य की धर्मपत्नी तथा उनके अन्य परिवारजन भी उपस्थित रहे। अपने पुत्र के नामकरण के उपलक्ष्य में उन्होंने मिठाई बांटकर प्रसन्नता व्यक्त की।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटाएँ -
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय प्रचार केन्द्र स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक हरियाणा में आर्य संन्यासी एवं वानप्रस्थियों का सिद्धान्त प्रशिक्षण शिविर एवं वेद प्रचार कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न

आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क एवं श्री नरेश निर्मल के भजनों तथा

स्वामी आर्यवेश जी के व्याख्यानों की रही धूम

पूरे कार्यक्रम का संयोजन युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश एवं व्यवस्था का दायित्व बहन प्रवेश आर्या एवं बहन पूनम आर्या ने संभाला

श्रावण मास में प्रारम्भ हुए वेद प्रचार के कार्यक्रम देश-विदेश में उत्साह के साथ प्रारम्भ हो चुके हैं। इसी क्रम में आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय प्रचार केन्द्र मिशन आर्यावर्त न्यूज के मुख्यालय स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, आश्रम, ग्राम-टिटौली, रोहतक (हरियाणा) में भी 10 से 13 अगस्त, 2021 तक वेद प्रचार का शानदार कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में भारतीय आर्य भजनोपदेशक के अध्यक्ष श्री सहदेव बेधड़क, श्री नरेश निर्मल, श्री सोमपाल आर्य आदि ने भजनों के द्वारा श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया। उनके अतिरिक्त श्री रामेन्द्र आर्य, महाशय रणवीर सिंह आर्य, श्री अजीत सिंह आर्य, स्वामी आत्मानन्द व स्वामी संगीतानन्द आदि ने भी अपने भजनों से श्रोताओं को आनन्दित किया। वेद प्रचार के इस कार्यक्रम में प्रतिदिन प्रातः यज्ञ के उपरान्त 9 से 12 बजे तक तथा सायं 4 से 7 बजे तक नियमित निरन्तर चले इस कार्यक्रम में स्वामी आर्यवेश जी के वैदिक सिद्धान्तों एवं मान्यताओं पर प्रभावशाली प्रवचन हुए। स्वामी जी ने इस अवसर पर वैदिक मान्यताओं यथा सृष्टि उत्पत्ति, कर्मफल व पुनर्जन्म, वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था, सोलह संस्कार, पंच महायज्ञ, अष्टांग योग एवं धार्मिक क्षेत्र में चल रही अवैदिक मान्यताओं, जादू-टोना, तन्त्र-मन्त्र, राशिफल, फलित ज्योतिष, झाड़-फूंक, गंडे ताबीज एवं विविध पाखण्ड एवं अन्धविश्वासों पर तार्किक एवं विचारोत्तेजक व्याख्यान देकर श्रोताओं को वैदिक मान्यताओं से अवगत कराया तथा इनके प्रचार-प्रसार के लिए प्रेरित किया। वेद प्रचार कार्यक्रम के साथ-साथ वैदिक आर्य संन्यासियों एवं वानप्रस्थियों के लिए सिद्धान्त एवं कर्मकाण्ड प्रशिक्षण शिविर लगाया गया था जिसमें लगभग 23 संन्यासियों एवं वानप्रस्थियों ने भाग लिया। संन्यासियों को आर्य समाज के दस नियम, संन्ध्या, यज्ञ करने की विधि, यज्ञ की विस्तृत व्याख्या एवं व्याख्यान देने की कला का प्रशिक्षण दिया गया। प्रतिदिन सभी संन्यासियों एवं विद्वानों से संन्ध्या यज्ञ, आर्य समाज के नियम तथा अन्य वैदिक मान्यताओं पर प्रश्न पूछे जाते थे और उनसे व्याख्यान दिलाया जाता था। इस प्रकार का शिविर यह पहली बार आयोजित किया गया जिसमें भाग लेने वाले सभी संन्यासियों एवं वानप्रस्थियों ने अत्यन्त संतोष व्यक्त किया और कहा कि हम आर्य समाज के किसी भी कार्यक्रम में अब वैदिक सिद्धान्तों, संध्या एवं यज्ञ पर

तथा अन्य विषयों पर भी अपने विचार प्रस्तुत कर सकते हैं। आर्य समाज के सत्संग में अब पूरे आत्मविश्वास के साथ बोल सकते हैं। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम के समापन के अवसर पर सभी संन्यासियों एवं प्रमुख कार्यकर्ताओं को प्रतिदिन संन्ध्या एवं योगाभ्यास करने, कम से कम एक वेद मन्त्र का भावार्थ सहित पाठ करने और प्रतिदिन परोपकार का कोई एक कार्य करने का संकल्प दिलाया गया। सभी उपदेशकों का शॉल एवं ओ३म् पट्ट देकर सम्मान किया गया और सभी संन्यासियों को भी सम्मानित किया गया।

इस पूरे कार्यक्रम का कुशल संयोजन युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने किया और भोजन, आवास एवं अन्य सभी व्यवस्थाओं का दायित्व बहन प्रवेश आर्या एवं बहन पूनम आर्या ने संभाला। उनके साथ श्री धर्मेन्द्र कुमार आर्य, श्री उत्तम देव आर्य, श्री सोनू कुमार आर्य, श्री रामेन्द्र आर्य, श्री सचिन आर्य, कु. पूनम आर्या आदि का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम में टिटौली के अतिरिक्त सांघी, खिडवाली, जींदरान, फरमाणा, रोहतक आदि स्थानों से श्रोतागण सम्मिलित हुए।

इस अवसर पर कोरोनाकाल में यज्ञ के द्वारा वातावरण शुद्धि महाभियान में बढ़-चढ़कर सहयोग करने वाले कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया। स्वामी आदित्यवेश जी के नेतृत्व में जिन कार्यकर्ताओं ने सक्रिय रूप से कार्य किया था, उनमें मुख्यतया श्री अजय पाल आर्य, श्री रजनेश कुण्डू, श्री मनीष आर्य, श्री अमित आर्य, श्री तकदीर आर्य, श्री राजवीर वशिष्ठ, डॉ. नारायण सिंह आर्य, श्री कृष्ण प्रजापति, पं. नरेश आर्य, आर्य जिले सिंह सैनी, श्री महासिंह आर्य, श्री राहुल आर्य, श्री वीरेन्द्र कुण्डू, श्री नवीन कुण्डू, श्री जयवीर आर्य, श्री अंकित कुण्डू, श्री मनीष कुण्डू, श्री मनदीप, श्री अभिमन्यु, श्री सुमित, श्री चन्द्रशेखर शास्त्री आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इस पूरे कार्यक्रम में आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य बलवीर जी, डॉ. रणवीर सिंह खासा, बहन मूर्ति देवी आर्या, श्री इन्द्रजीत राणा आदि ने आर्थिक सहयोग देकर उत्साह बढ़ाया। आचार्य बलवीर जी ने एक दिन के विशेष भोजन का व्यय अपनी ओर से प्रदान किया। कार्यक्रम की चारों दिन विशेष धूम रही।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।